REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 10 | JULY - 2023

प्राचीन और सुदृढ स्वर्णगिरि दुर्गः एक एतिहासिक अध्ययन

डॉ. माया ए. पंचाल
अध्यापक आर्टस कोलेज, पालडी , ता. दियोदर, जि. बनासकांठा.

Abstract:

पश्चिमी राजस्थान में अरावली पर्वत श्रृंखला की **सोनगिरि** पहाडी पर सूखडी नदी के दाहिने किनारे **गिरि दुर्ग** जालौर में निर्मित है । जालौर के किले को मारवाड राज्य का गढ़ माना जाता था । यह दुर्ग पूर्ण रुप से **हिन्दु शैली** में निर्मित है । ईसे किले का सुदृढ दुर्गो में गिना जाता है । मारवाड की पूर्व राजधानी जोधपुर से लगभग 75 मील दक्षिणी पश्चिमी भाग में अवस्थित है । जालौर के किले को अभी तक कोई आक्रान्ता ईसके मजबूत द्वार को खोल नहीं पाया था । विशेषकर जालौर के किले के साथ सोनगरा चौहानों की वीरता, शौर्य और बलिदान के जो अनेक आख्यान जुडे है वे इतिहास के स्वर्णाक्षरों में उल्लेख करने योग्य है । आज भी लंबी कतार की प्राचीर डेढी-मेढी दिवारों पर कही कही द्वार पे तोपखाने गोले के निशान देखने को मिलता है और **इस दुर्ग को पुरारत्व विभाग के माध्यम से सुरक्षित रखने को संरक्षण के देखरेख में लेना चाहिये और अच्छे पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करना चाहिए । जो यह दुर्ग आज उंची पहाडी की घटादार जंगल की घाटी में असुरक्षित रुप में विधमान है ।**

प्रस्तावनाः

मारवाड के सबसे प्राचीन दुर्ग सोनगिरि पर्तनमाला पर बना जालौर का किला गिरि दुर्ग श्रेणी का उत्तम उदाहरण है । यह दुर्ग दक्षिण में **1200 फूट** उंची पहाडी पर स्थित है । दुर्ग तक एक टेढा – मेढा पहाडी रास्ता जाता है जिसकी उंचाई कदम कदम पर बढती हुई प्रतीत होती है ।

जालौर जिला मुख्यालय जालौर प्राचीन काल से महर्षि जाबलि के नाम पर “जाबालिपुर” के नाम से विख्यात अति प्राचीन नगर है जो **स्वर्णगिरि** अथवा **कंचनगिरी** के नाम से पुराणों में विख्यात रमणीक पर्वत की तलहरी में बसा है । मध्यकाल में **जालन्धर नाथ ऋषि** के नाम पर यह **“जालन्धर”** के नाम से भी विख्यात हुआ ।[1]

जिले की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर बाडमेर जिले की चौहटन, बाडमेर तथा सिवाना तहसीलें, उत्तर-पूर्वी सीमा पर पाली जिले की पाली व बाली तहसीलें, दक्षिणी-पूर्वी सीमा पर सिरोही जिलें की शिवगंज, सिरोही तथा रेवदर तहसीलें और दक्षिणी सीमा पर गुजरात प्रान्त के बनासकांठा व कच्छ जिले स्थित है । सांचोर तहसील की सीमा कुछ दुरी तक पाकिस्तान की सीमा को भी छूती है । स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व वर्तमान जालोर जिला तत्कालीन जोधपुर राज्य अथवा मारवाड रियासत का एक भाग था तथा प्रशासनिक दृष्टि से तीन परगनों या हुकूमतों – जालौर, जसवंतपुरा एवं सांचोर में विभक्त था ।

जालौर दुर्ग:

जालौर एक प्राचीन नगर है । ज्ञात इतिहास के अनुसार, जालौर और उसका निकटवर्ती इलाका **गुर्जर देश** का एक भाग था यहाँ पर प्रतिहार शासकों का वर्चस्व था । प्रतिहारों के शासनकाल (750-1018 ई.) में जालौर एक समृध्धिशाली नगर था । प्रतिहार नरेश वत्सराज **कुवलयमाला** की रचना की । जालौर के इस सुदृढ एतिहासिक दुर्ग का **निर्माण** के बारे में इतिहासकार डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार प्रतिहार नरेश नागभट्ट प्रथम ने जालौर में अपनी राजधानी स्थापित की । उसने (नागभट्ट प्रथम) ही संभवतः जालौर दुर्ग का निर्माण करवाया और वास्तविक निर्माण समय आज तक अज्ञात है । हालांकि एसा माना जाता है कि किले का निर्माण 8वीं – 10वीं शताब्दी के बीच हुआ था । 10वीं शताब्दी में जालौर शहर परमार राजपूतो द्वारा शासित था । **जालौर का किला 10वीं शताब्दी का किला है और मारु व रेगिस्तान के नौ महल में से एक है जो परमार वंश के आधीन था ।**

प्रतिहारों के पश्चात् जालौर पर परमारों (पंवारो) का शासन स्थापित हुआ । डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने परमारों को जालौर दुर्ग का निर्माता या संस्थापक माना है ।[2]परंतु एतिहासिक साक्ष्य इस संभावना की ओर संकेत करते है कि उन्होंने पहले से विधमान व प्रतिहारों द्वारा निर्मित इस प्राचीन दुर्ग का जीर्णोध्धार या विस्तार करवाया था । जालौर दुर्ग के तोपखाने से परमार **राजा वीसल** का एक **शिलालेख** मिला है । जिसमें उसके पूर्ववर्ती परमार राजाओं का नामोल्लेख है ।**विक्रम संवत् 1174 (ई.सन् 1118) के ईस शिलालेख में वीसल की रानी मेलरदेवी द्वारा सिन्धुराजेश्वर के मंदिर पर स्वर्ण कलश चढाने का उल्लेख है ।**[3] उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है कि प्रारंभिक परमार नरेश बहुत वीर और प्रतापी हुए परंतु बाद में उनके क्रमानुयायी निर्बल पडते गये जिसके फलस्वरूप परिस्थिति के अनुसार कभी स्वतंत्र रुप से तो कभी गुजरात के चालुक्य नरेशो के सामन्त के रुप में उन्होंने यहाँ शासन किया ।

जालौर दुर्ग पर विभिन्न कालों में प्रतिहार, परमार, चालूक्य, राठौड इत्यादि राजपूत राजवंशो ने शासन किया वही दुर्ग पर दिल्ली के मुस्लिम सुलतानों, मुगन बादशाहों तथा अन्य मुस्लिम वंशो का भी अधिकार रहा । ई. सन् **1311 में दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी** ने किले पर हमला किया और इस दुर्ग को नष्ट कर दिया था । किले के खंडहर पर्यटको के प्रमुख आकर्षण है जो भारत के इतिहास के बारे में और भी ज्यादा जानने के लिए यहाँ आते है । विशेषकर जालौर के किले के साथ सोनगरा चौहानो की वीरता, शौर्य और बलिदान के जो करुण गाथाओं के आख्यान जुडे है वह इतिहास के स्वर्णाक्षरों में उल्लेख करने योग्य है ।

नाडौल के चौहानवंशीय युवराज कीर्तिपाल ने जालौर पर अधिकार कर परमारों का वर्चस्व सदा के लिए समाप्त कर दिया । **सूंधा पर्वत अभिलेख (वि.सं. 1319) में कीर्तिपाल के लिए "राजेश्वर" शब्द का प्रयोग हुआ है ।** जो उसकी महत उपलब्धियों के अनुरुप उचित लगता है।[3] कीर्तिपाल का पुत्र और उत्तराधिकारी **समरसिंह** बहुत वीर और पराक्रमी हुआ । उसने विविध निर्माण कार्यों के द्वारा जालौर की सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ किया तथा अपने विजय अभियानों द्वारा नवस्थापित राज्य

का विस्तार किया । सुंधा पर्वत शिलालेख से पता चलता है कि समरसिंहने जालौर के कनकाचल अथवा स्वर्णगिरि को चतुर्दिक विशाल और अनंत प्राचीर से सुरक्षित किया ।

जालौर के किले की दुर्जेय स्थिति को देखकर **"ताज उल मासिर"** का लेखक हसन निजामी उस पर मुग्ध हो गया । उसने लिखा है –

"जालौर बहुत ही शक्तिशाली और अजये दुर्ग है । जिसके द्वार कभी भी किसी विजेता के द्वारा नहीं खोले गये । चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो ।"

उदयसिंह रामसिंह का उत्तराधिकारी था वो जालौर की सोनगरा चौहान शाखा का सबसे पराक्रमी और यशस्वी शासक हुआ । उक्त शिलालेख में उदयसिंह को तुर्कों का मान मर्दन करने वाला कहा गया है । उसने इल्तुतमिश की शक्ति का उपहास करते हुए अपना राज्य विस्तार किया । जालौर किले पर इल्तुतमिश कि दिल्ही से आयी हुई विशाल मुस्लिम सेना का पराजित होकर वापस लौटने पर **उदयसिं हने100 उँट** और **200 घोंडो** की प्रतीकात्मक भेंट देकर इल्तुतमिशन को वापस लौटा दिया ।

दिल्ली के सर्वाधिक शक्तिशाली और साम्राज्यवादी सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने **रणथंभौर** और **चितौड विजय** के बाद **मारवाड** को अपने आक्रमणों का लक्ष्य बनाया । इस जालौर दुर्ग पर आक्रमण करने का प्रमुख कारण यह भी था कि सन् **1298 में** जब अलाउद्दीन खिलजी **गुजरात** के प्रसिध्ध **सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त** करने के लिए अपने सेनानायकों **अलूगखां** और **नुरारतखां** के आधीन जो विशाल सेना वहाँ भेजी उसे वीर **कान्हडदेव** ने अपने जालौर राज्य से गुजर ने की अनुमति नहीं दी और उसको मेवाड होकर जाना पडा इतना ही नहीं, गुजरात अभियान से जालौर होकर वापस मुस्लिम सेना शाही खजाना लूट का माल और **सोमनाथ** की **खंडित प्रतिमा** के हिस्से को **कान्हडदेव** के किये पर छीन लिये । और साम्राज्यवादी, महत्वाकांक्षा और कान्डडदेव को सबक सिखाने की ईच्छा उसके जालौर आक्रमण का कारण बनी ।

जालौर किले पर जब अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया तो कान्हडदेव का भतीजा**सातलदेव** दुर्ग की रक्षा करता हुआ अपने सहयेंगी योध्धाओं सहित **वीरगति** को प्राप्त हुआ । कई राजपूत सैनिको ने शहादत प्राप्त की तो इसके बाद उनकी **पत्नियों ने जलती हूई आग के एक तालाब में कुदकर खुद को जला दिया ।** दीर्घकालिन दोर के कारण किले के भीतर खाध्य सामग्री का अभाव होता चला गया । संकट की इस वही में बीका नामक दहिया राजपूत सरदार ने विश्वासघात किया और शत्रु सेना को इस दुर्ग का गुप्त मार्ग बता दिया । कान्हडदेवने अपने राजकुमार वीरमदेव और विश्वस्त यौध्धाओं के घमासण युध्ध करते रहे और किले के भीतर सेंकडो ललनाओं ने **जौहर का अनुष्ठान किया ।**[4] कान्हडदेव के साथ ही जालैर से अतुल पराक्रमी और यशस्वी सोनगरा चौहानों का वर्चस्व हो गया ।

मारवाड और गुजरात की सीमा पर बने जालौर दुर्ग को अपनी सामरिक स्थिति के कारण प्राचनकाल से ही आक्रान्ताओं के भीषण प्रहार झेलने पडे । अपनी सुदृढता के कारण जालौर दुर्ग संकटकाल में जहाँ मारवाड (जोधपुर) के राजाओं का आश्रय स्थल रहा वहीं इसमें राजकीय कोष भी रखा जाता रहा ।

सोनगिरी पर्वतमाला पर बना जालौर का दुर्ग तक एक टेढा-मेढा पहाडी रास्ता जाता है । इस चढाई को पार करने पर प्रथम सूरजपोल मजबूताई से खडा आधा नष्ट हो गया है । वो सूरजपोल आता है । धनुषाकार छत से आच्छादित यह द्वार आज भी बडा सुंदर दिखाई देता है । इस सूरजपोल द्वार के उपर छोटे छोटे कक्ष बने हुए है जो आज की स्थिती सेस मात्र उसकी प्राचीर दिखाई देती है । क्षेत्रफल की द्रष्टि से वह दुर्ग 800 गज लंबा और 400 गज चौडा है । आसपास की भूमि से यह लगभग **1200 फीट** उँचा है ।[5]

जालौर दुर्ग की स्थापत्य की प्रमुख विशेषता यह है कि इसकी उन्नत प्राचीर ने अपनी विशाल बुर्जो सहित समुयी पर्वतमाला को अपने में वों समाविष्ट कर लिया है कि इससे किले की सही स्थिति और रचना के बारे बाहर से कुछ पता नहीं चलता । जिससे शत्रु भ्रम में पड जाता है । इस दुर्ग कि प्रथम सूरजपोल की छत या स्थापत्य अपने शिल्प और सौंदर्य के साथ **सामरिक सुरक्षा** की आवश्यकता का सुंदर समावेश किये हुए है । यह प्रवेशद्वार एक सुदृढ दीवार से इस प्रकार आवृत है की आक्रान्ता शत्रु प्रवेशद्वार को अपना निशाना नहिं बना सके । इसके पार्श्व में एक विशाल बुर्जबनी है । दुर्ग का दूसरा प्रवेशद्वार **ध्रुवपोल**तीसरा **चांदपोल** और चौथा सिरेपोल भी बहुत मजबूत और विशाल है ।[6]

जालौर दुर्ग के एतिहासिक स्थलों में महाराजा मानसिंह के महल और झरोखे आज भी विधमान है ।उसको देखने के लिए आज भी पर्यटक यहाँ आते है । महाराजा महल के उपरांत दो मंजिला रानी महल, प्राचीन जैन मंदिर, चामुंडा माता और जोगमाया के मंदिर, दहियों की पोल, सन्त मल्लिकशाह की दरगाह प्रमुख और उल्लेखनीय है । दरगाह और जैन मंदिर के बाय महिल तरफ जाने के रास्ते में किले में स्थित परमार कालीन कीर्ति स्तंभ कला का उत्कृष्ट नमूना है ।[7] दुर्ग के भीतर तोपखाना बहुत सुन्दर और आकर्षक है । जिसके विषय में कहा जाता है कि **यह परमार राजा भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला** थी जौं कालान्तर में दुर्ग के मुस्लिम अधिपतियों द्वारा मस्जिद में परिवर्तित कर दी गयी तथा **तोपखाना मस्जिद कहलाने लगी ।** पहाडी के शिखर भाग पर निर्मित **वीरमदेव की चौकी** उस अप्रतिम वीर की यशोगाथा को संजोये हुए है । इस दुर्ग के भीतर जाबालिकुंड, सोहनबाग सहित अनेक जलाशय और विशाल बावडियों जलापूर्ति के मुख्य स्त्रोत है । ये सब प्राचीन स्थापत्य किले में आज भी विधमान है ।

सारांशः

मारवाड रियासत की पूर्व राजधानी जोधपुर से 75 मील इस जालौर के स्वर्णगिरी दुर्ग प्राचीन इतिहास की साक्षी देता हुआ आज भी संपूर्ण खंडर तो नहि बल्कि आधा नष्ट हो चूका है । आज भी स्वर्णगिरी दुर्ग अतीत की याद दिलाते विधमान है । ईस दुर्ग की हमने भी मुलाकात ली थी तब एसा महसुस हुआ के इतनी लंबी कतार की प्राचीर की सुरक्षा व्यवस्था के साथ साथ कही आक्रांताओने इस दुर्ग पर घेरा डाला है । तब यह दुर्ग हर हंमेश की तरह अजय रहा है । और यह दुर्ग कला स्थापत्यका भी उत्तम नमूना है । इस दुर्ग में अन्न भंडार, सैनिक के आवास गृह, अधशाला इत्यादि भवन भी बने हुए है । यह किला परमार शासन के तहत रेगिस्तान (मारु) के 9 महलों मे से एक था । जिसे **सोनगिरी या गोल्डन माउंट** के नाम से भी जाना जाता था । यह किला जालौर आनेवाले पर्यटको को बेहद आकर्षित करता है । किले का सबसे बडा आकर्षण **उँची किलेनुमा दीवारे** है और उन पर बने तोंपो के गढ है ।

युग परिवर्तन के साथ स्वर्णिम अतीत का प्रहरी जालौर दुर्ग समुचित संरक्षण और देखरेख के अभाव में काल के क्रुर प्रवाह को झेलता हुआ श्रीहिन होकर संपूर्ण विनाश के कगार पर खडा है । इस दुर्ग को एक अच्छे पर्यटन केन्द्र के रुप में विकसित किया जाना चाहिए ।

संदर्भः

1. डॉ. राघवेन्द्रसिंह मनोहर, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 13वां संस्करण, 2019 पृ. 46
2. Sharma (Dr.) Dasharath, "Rajasthan Through Ages" Published By Rajasthan State Archiny Bikaner 2014

3. विश्वनाथ पंडित, मारवाड का इतिहास, भाग-1, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर वर्ष-1998, पृ. 15
4. राठौड (डॉ.) विक्रमसिंह, मारवाड का सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाशक राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर प्रथम संस्करण वर्ष-2000 पृ. 89
5. त्रिवेदी विजयकुमार, सिरोही राज्य का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, जोधपुर, 1998, पृ. 39
6. मोहनलाल गुप्ता, जोधपुरः जिलेवार सांस्कृतिक एवं एतिहासिक अध्ययन, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2001, पृ. 111
7. प्रत्यक्ष मुलाकात, बाघाराम, 177 पोलिस वायरलेस (जालौर) दिनांक 30-10-2021

•

डॉ. माया ए. पंचाल
अध्यापक आर्टस कोलेज, पालडी , ता. दियोदर, जि. बनासकांठा.